मुकेश शर्मा

ई-मेल-**mukeshsharma69@gmail.com**

कठपुतलियाँ

आज खूब बन-ठन कर आयी मिस मोना ने साहब के कमरे में मुस्कुराते हुए प्रवेश करके 'गुड मॉर्निंग' बोला ही था कि साहब के मुँह से निकल गया—"आय-हाय।"

तुरन्त मिस मोना कातिल स्माइल देते हुए पीछे दीवार की तरफ खिसक गई।

"अरे मोन्ना, सुबह थोड़ा टाइम से आ जाया कर। फिर लोग कहते हैं कि मोन्ना को आपने बहुत छूट दे रक्खी है।"

"सर, रास्ते में ज़रा मंदिर रुक गई थी। वहाँ मैंने आपकी प्रमोशन के लिए मन्नत माँगी हुई है। माता रानी जल्दी ही आपको प्रमोशन देंगी।"

"अच्छा, अच्छा। ओके, ओके।"

तभी एक-एक करके पुरुष कर्मचारी कमरे में आने लगे और 'गुड मॉर्निंग' बोलते हुए साहब के पाँव छूने लगे। वे सभी साहब की बहुत ज्यादा 'रिस्पेक्ट' करते थे। तभी घबराया हुआ तनेजा कमरे में घुसा, वह आधा घण्टा लेट था।

साहब को गुस्सा आ गया—"झोंपड़ी के, ऐसे ही लेट आता रहा तो ऐसी मारूँगा लात कि चण्डीगढ़ से ट्रांसफर ऑर्डर लिए नारनौल बैठा पाएगा।"

तनेजा की आँखें डबडबा आई—"साहब, मैं जानता हूँ आपके एक इशारे पर ही चण्डीगढ़ से ऑर्डर आ जाते हैं। हेड ऑफिस जनाब की जेब में है!"

"हाँ, तो।" साहब घबरा गए। उन्हें लगा कि शायद इसका स्वाभिमान जाग गया है।

तनेजा की आवाज में दर्द था—"मैं आपको छोड़कर कहीं नहीं जा सकता जनाब। आज ही मैंने मिसिज को बोल दिया कि मुझे भूल जा। अब मेरा बाकी का जीवन साहब की सेवा के लिए है।"

सुनकर साहब भी इमोशनल हो गए—"ओ यार, सेंटी ना हो।"

इसी बीच कमरे में स्टेनो, साहब के बेटे के लिए एक खिलौना लिए आ गया।

"अबे, यो के ठा लाया?"

"जनाब, ये कुर्सियों से चिपकी कठपुतलियों का सैट है। इन्हें चाहे लुढ़का दो, इन पर पानी छिड़क दो, कोई हलचल नहीं होगी। लेकिन जैसे ही इन्हें इनकी कुर्सियों से हल्का-सा खींचोगे, तुरन्त इनमें रिदम्स आ जाएँगी और म्यूजिक शुरु हो जाएगा।"

"अच्छा,बजा इसको।"

"इनमें कोई आत्मा थोड़े ही है, सर।" कहते हुए स्टेनो ने एक कठपुतली को कुर्सी से खींचा, म्यूजिक शुरु।

"हो-हो-हो-हो।" साहब हँसने लगे। सारा स्टाफ ठहाके लगाने लगा। मोना तो खूब हँसी, खूब हँसी।

गलत फैसलों की जिम्मेदारी?

मुकेश शर्मा

अद्वितीय सुंदरी द्रूति के रूप से मोहित होकर पाँचों भाई युद्धवीर, भीमसिंह, अर्जुन सिंह, रकुल और रहदेव ने निर्णय लिया कि वे आपसी सहमति के साथ द्रूति के सामने विवाह का प्रस्ताव रखेंगे यानी एक स्त्री के पाँच पति। उचित अवसर बनते ही उन पाँचों भाइयों ने द्रूति के सामने विवाह का प्रस्ताव रख दिया। किंतु अमीर पिता की बेटी द्रूति इस प्रस्ताव से चौंक गई। उसने संयम का परिचय दिया और उन पाँचों भाइयों से पूछा—"बुरा मत मानना, मैं जानना चाहूँगी कि यदि तुम्हारी मम्मी के पाँच पति होते तो तुम्हें कैसा लगता?"

"लड़की, ज़ुबान सँभालकर बात कर।" भीम सिंह गुस्से से काँपने लगा।

"अच्छा, मम्मी की बात छोड़ो। चलो, यह बताओ कि इस विवाह से यदि मुझे संतान के रूप में पुत्री प्राप्त हुई और मैं उसका विवाह एक की बजाय पाँच युवकों से करना चाहूँ तो तुम्हें कोई आपत्ति तो नहीं होगी?"

"गुस्सा मत दिला, नहीं तो तेरी ज़ुबान खींच लूँगा।" रकुल आपे से बाहर होने लगा। लेकिन युद्धवीर ने उसे शांत होने का इशारा दिया।

"ठीक। मम्मी भी नहीं, बेटी भी नहीं। लेकिन तुम पाँचों भाई एक स्त्री से विवाह करने को व्याकुल हो। क्या इससे रिश्ते-नातों की मर्यादा, गरिमा बनी रह सकेगी? क्या तुम्हारे अंदर इतना बोध नहीं है कि यह सही फैसला नहीं है? या तुम्हारे ग़लत फैसलों की जिम्मेवारी तुम्हारी नहीं ?"

दरवाजों पर हाथ

मैं अभी पिंकी के घर के सामने पहुँचा ही था कि दरवाजे पर खड़ी उसकी मम्मी ने मुझे देखते ही अपने घर के दरवाजे बंद कर लिये। बहुत ही किरकिरी हो गई। मैंने झेंपते हुए दायें, बायें देखा कि किसी ने यह दृश्य देख तो नहीं लिया। उनके पड़ोसी गुप्ता जी ने यह सारा सीन देख लिया था। उन्हें मुझ पर बहुत तरस आ रहा था।

मैं डोर बेल बजाना चाहता था, लेकिन पिंकी की मम्मी की बेरुखी देखकर हिम्मत नहीं हो रही थी। तभी गुप्ता जी आ गए, उन्होंने मेरा हाथ पकड़ा और डोर बेल बजा दी। चेहरे पर निराशा लिए पिंकी की मम्मी यानी आँटी ने दरवाजा खोल दिया।

"ये युवक आपसे मिलने के लिए आया था।" यह कहते हुए गुप्ता जी वहाँ से खिसक लिए। अब दरवाजा दोबारा बंद करने के मूड में खड़ी आँटी थीं और सामने मैं अनचाहा आगन्तुक।

"हाँ बोल, क्या है?"

"पिंकी की क्लासमेट मिली थी, वो कह रही थी कि...।"

"तू सारा दिन यहाँ, वहाँ चक्कर काटता रहता है, कोई नौकरी क्यों नहीं ढूँढ लेता?" पिंकी की मम्मी जल्दी से जल्दी दरवाजा बंद कर लेना चाहती थीं।

"वो कह रही थी कि पिंकी हॉस्पिटल में एडमिट है और उसके लिए ब्लड डोनर चाहिये। रेयर ब्लड ग्रुप है।"

"हाँ, सही है। लेकिन डोनर का ब्लड ग्रुप 'ए नेगेटिव' होना ज़रूरी है।" आँटी की आवाज में बेबसी की झलक थी।

"आँटी, मेरा ब्लड ग्रुप 'ए नेगेटिव' ही है और मैं ब्लड डोनेट करने के लिए तैयार हूँ।"

पिंकी की मम्मी के दरवाजों को सख्ती से पकड़े हाथ बेजान से होकर नीचे आ गए।